

बच्चों से प्रेरक वार्तालाप



(वार्तालापकर्ता)

प्रशान्त अग्रवाल

सहायक अध्यापक

प्राथमिक विद्यालय डहिया

विकास क्षेत्र : फतेहगंज पश्चिमी

जनपद बरेली

बच्चों से प्रेरक वार्तालाप

'अनुक्रमणिका'

1. बच्चों से प्रेरक वार्तालाप
2. इंजन बनो
3. प्रेरक संवाद
4. समय का महत्त्व
5. एक प्रेरक उद्बोधन
6. छवि-निर्माण के उपाय
7. बच्चों को बताने योग्य
8. उद्बोधन सूत्र
9. छोटा लेकिन महत्त्वपूर्ण दृश्य
10. बड़ी कक्षा के बच्चों से एक प्रेरक संवाद
11. बच्चों के समक्ष एक प्रेरक उद्बोधन
12. अगर पढ़ाई में मन न लगता हो तो...
13. Wilma की Willpower : एक प्रेरक मिसाल

बच्चों से प्रेरक वार्तालाप

(आजकल यूनिफॉर्म आदि कारणों से विद्यालय पहुँचने वाले बच्चों की counselling)

- पापा कमाई करके अपना फ़र्ज़ निभा रहे हैं, मम्मी घर के सारे काम करके अपना फ़र्ज़ निभा रही हैं, क्या तुम अपना फ़र्ज़ (पढ़ाई करना) निभा रहे हो? और अपने हिस्से का काम किये बिना खाने वाला चोर होता है, इसलिए मेहनत करके ही खाओ।
 - ठान लो कि सुबह 1 घण्टा पढ़ाई के बाद ही दोपहर का भोजन और शाम को 1 घण्टा पढ़ने के बाद ही रात का भोजन करेंगे।
 - फ़िल्म में भीड़ तो बहुत होती है, पर हीरो तो 1-2 ही होते हैं, तुम्हें भीड़ का हिस्सा बनना है या हीरो जैसा? और हीरो केवल चाहने से नहीं बनते, मेहनत करनी होगी, सब भले घूम रहे हों लेकिन हीरो बनने के लिए तुम्हें उनसे कुछ अलग करना होगा, पढ़ना होगा।
 - केवल पढ़ो नहीं, दूसरे बच्चों को पढ़ाओ भी, जब तुम उन्हें पढ़ाओगे/पढ़ाओगी तो उनका ध्यान भले ही कम लगे, लेकिन तुम्हें तो पूरा ध्यान देना होगा, इसलिए तुम्हारी पढ़ाई तो मजबूत हो ही जायेगी।
 - अभी तो सारे बच्चों (पढ़ने और न पढ़ने वालों) में कोई खास अंतर नहीं दिखता लेकिन बड़ा होने पर इसका फ़र्क पता चलेगा, ठीक पटरियों की तरह, जहाँ अलग-अलग दिशाओं में जाने वाली पटरियाँ भी शुरुआत में लगभग एक ही दिशा में जाती लगती हैं।
 - पढ़ाई केवल नौकरी के लिए नहीं होती, सारी जिंदगी में कदम-कदम पर काम आती है। (बैंक, बाज़ार आदि के उदाहरण अनपढ़ों की बेचारगी दर्शाते हुए समझाना)
 - पढ़ने वाले भी खेलते हैं, घूमते हैं लेकिन पढ़ने के बाद और तब उन्हें इन कामों में मज़ा भी ज़्यादा आता है।
 - घर का या खेत का काम ज़्यादा करना पड़ता हो, तो भी आधा घण्टा ही सही, थोड़ा सा पढ़ो ज़रूर, ताकि पढ़ाई का तार न टूटे।
 - अच्छा बताओ, भगवान किससे ज़्यादा खुश होंगे, फ़र्ज़ निभाने वाले से या लापरवाह से! इसलिए हमारी डांट के डर से या किसी को दिखाने के लिए नहीं, अपना नफा-नुकसान सोचकर पढ़ो।
 - बड़े भाई-बहन का फ़र्ज़ तो बहुत ज़्यादा होता है, तुम पढ़ोगे/पढ़ोगी तो पढ़ाई का माहौल बनेगा, छोटे भाई-बहन भी पढ़ेंगे।
 - बोझ समझकर नहीं, मज़े-मज़े में पढ़ो, खेल-खेल में पढ़ो। शुरु में ज़्यादा मेहनत लगती है, लेकिन एक बार पढ़ना आ जाये, फिर तो पढ़ने में मज़ा आता है।
-
(वार्ताकार : प्रशान्त अग्रवाल, प्राथमिक विद्यालय डहिया, बरेली)

इंजन बनो

प्यारे बच्चों,

मैं चाहता हूँ कि कोई भी विद्यार्थी डिब्बा न रह जाये बल्कि हर विद्यार्थी इंजन बन जाये क्योंकि :

1. इंजन को धक्का नहीं लगाना पड़ता, वो खुद चलता है। अतः कहने पर नहीं, स्वयं पढ़ो।

2. इंजन शक्तिशाली हो तो अन्य डिब्बों और उनमें भरे ज्ञान को भी खींच लेता है।

(हाँ, पटरी की दिशा सही होना बहुत ज़रूरी है, अतः विषयी ज्ञान के साथ संस्कारों की शिक्षा परम आवश्यक है।)

(विचारक : प्रशान्त अग्रवाल, प्रा. वि. डहिया, बरेली, उ.प्र.)

प्रेरक संवाद

* इंजन
खुद चलता है

डिब्बा
धकियाना पड़ता है

इंजन बनोगे या डिब्बा ? तो खुद पढ़ो

* गाय का बहड़ा
फुर्तीला होता है

भैंस का पइड़ा
लट्टक होता है

गाय बनोगे या भैंस ? तो मेहनती बने

* भरा बर्तन
शान्त रहता है

खाली बर्तन
शोर करता है

भरे हो या खाली ? तो शान्त रहो

* ईमानदार
अकल लगाता है

बेईमान
नकल करता है

ईमानदार हो या बेईमान ? तो नकल नहीं अकल
चलाओ

* होशियार
पहले मेहनत फिर मजा

बुद्ध
पहले मजा फिर सज़ा

होशियार हो या बुद्ध ? तो दूर की सोचो

समय का महत्त्व

(बच्चों से प्रेरक आह्वान)

प्यारे बच्चों,

अगर तुम्हारा दो रुपए का सिक्का खो जाये, तो क्या दुःख होता है, भई मुझे तो होता है।

अब ये तो तुम जानते ही हो कि पैसे से भी ज़्यादा कीमती है 'समय'।

क्या इतना कीमती समय बेकार में खोने पर तुम्हें दुःख होता है?

अगर होता है, तो इसका मतलब तुम समझदार हो,

और अगर नहीं होता, इसका मतलब तुम हो अभी.....

अब बताओ कौन-कौन है होशियार समझदार जो समय बेकार नहीं करेगा ?

(विचारक : प्रशान्त अग्रवाल, प्रा. वि. डहिया, बरेली, उ.प्र.)

एक प्रेरक उद्धोदन

(समझने/याद करने में देरी से निराश विद्यार्थियों से एक प्रेरक संवाद)

शिक्षक : "बच्चों, क्या 'प्यासे कौए' वाली कहानी में कौए को पहला कंकड़ डालते ही पानी पीने को मिल गया था?"

बच्चे : "नहीं"

शिक्षक : "तो क्या उसके द्वारा डाले गए शुरुआती कंकड़ बेकार गये?"

बच्चे : "नहीं, उनकी वजह से ही तो पानी धीरे-धीरे ऊपर आ पाया।"

शिक्षक : "प्यारे बच्चों, ठीक इसी प्रकार कोई बात ध्यान से सुनने पर भी अगर समझ न आये या याद न हो तो निराश मत हो, शुरुआती कंकड़ों की तरह वो ध्यान से सुनना भी बेकार नहीं गया और एक दिन ऐसे ही कंकड़ डालते रहने से कठिन से कठिन बात भी समझ में आ जायेगी और तुम अपने ज्ञान की प्यास बुझा सकोगे। हाँ, कंकड़ जितना बड़ा होगा अर्थात ध्यान जितना अधिक दोगे, सफलता भी उतनी ही जल्दी मिलेगी। इसलिए धीरज बनाये रखकर कोशिश करते रहो क्योंकि 'कोशिश करने वालों की....'"

बच्चे (उत्साह से) : "....कभी हार नहीं होती"

(उद्धोदक : प्रशान्त अग्रवाल, प्राथमिक विद्यालय डहिया, बरेली, उ.प्र.)

छवि निर्माण के उपाय

1. भाषा में सुधार
2. दूसरों की सहायता
3. दूसरों को नशे से रोकना
4. पानी बचाने को कहना
5. पेड़-पौधों की सेवा करना
6. साफ-सफाई पर जोर
7. पढ़ना और पढ़ने को प्रेरित करना
8. बड़ों का अभिवादन
9. चलने की शिष्टता
10. प्लास्टिक का इस्तेमाल करने से रोकना
11. जुआ खेलने से रोकना
12. अपनी चीजें दूसरों से साझा करना

छवि निर्माण के उपाय

झांसी के विद्यार्थी सूफियान पर जब अपने विद्यालय के बच्चों के बीच चर्चा की तो मुद्दा यह बन गया कि

बच्चे ऐसे कौन-कौन से काम कर सकते हैं जिससे गाँव में उनकी अधिक से अधिक अच्छी छवि बने क्योंकि अच्छी छवि से आगे चलकर अनेक लाभ मिलते हैं जैसे चुनाव लड़ने पर, ऋण-प्राप्ति में, विवाद होने पर, काम मिलने में आदि...

ऐसे में उक्त बिंदु उभर कर आये जिन्हें सुधी साथीगण और विस्तार दे सकते हैं। आखिर सच्ची शिक्षा और सच्चे देशवासी के निर्माण के यही तो आधार हैं।

(प्रस्तोता : प्रशान्त अग्रवाल, प्रा.वि. डहिया, बरेली)

(बच्चों को बताने योग्य)

एक दिन सुबह-सुबह ही सपने में देखा कि मैं बच्चों से प्रेरक बातें कर रहा हूँ जिनमें से एक बात यह थी (जो इससे पहले कभी जाग्रत अवस्था में भी नहीं सोची थी),

"अगर तुम एक घंटा नष्ट करते हो तो वह पूरी ज़िन्दगी में से एक घंटा नहीं है, बल्कि तुम्हारी उस कीमती student life का एक घंटा है जो सिर्फ २२-२३ साल की उम्र तक होती है।"

(शब्द कुछ और रहे होंगे किन्तु मूल भाव यही था, जो जागने पर याद रहा : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली)

उद्धोधन सूत्र

अक्सर ही बच्चों से बोलते/बात करते-करते सूत्रपरक बातें बन जाती हैं।

- कुछ दिन पहले से बच्चों से कहना शुरू किया है कि अपनी बोलचाल में **मानक भाषा** का प्रयोग करो। जैसे 'इनने मोय पढ़ाओ है' की बजाय 'इसने मुझे पढ़ाया है' कहो।
(और बच्चे मानक भाषा जानते भी हैं, बस व्यवहार में प्रयोग नहीं करते। हालांकि लोकभाषा का अपना महत्त्व और मिठास है, फिर भी कुछ सोचकर यह किया।)
- पूरे दिन में यदि हम 4000 शब्द बोलते हैं तो अनेक शब्द गैरज़रूरी होते हैं। उनके प्रयोग से बचो क्योंकि बोलने में ताक़त लगती है। ताक़त भोजन से आती है और भोजन पैसे से आता है। अतः **कम बोलने का मतलब पैसे बचाये और पैसे बचाना यानी पैसे कमाना**। तो अब कम बोलकर कौन-कौन कमाई शुरू कर देगा?
(उक्त concept को 'हितभुक्, मितभुक्, ऋतभुक्' वाली कहानी द्वारा भोजन संबंधी आदत से भी जोड़ा)
- तुम आपस में तो काफी बातें करते हो तो अब ऐसा करो कि कोई गलती होने पर आपस में **एक-दूसरे को टोको** (मानक भाषा से इतर बोलने, चप्पल की आवाज़ आने, बाल-यूनिफॉर्म आदि व्यवस्थित न होने, समय व्यर्थ गँवाने आदि अनेक स्थितियों में)
(निंदक नियरे राखिये... विस्तारपूर्वक समझाकर स्वस्थ आलोचना करने और सहने के गुर भी बताये)
- कुछ बच्चे अक्सर फूल तोड़ने की अनुमति माँगते हैं, उन्हें माखनलाल चतुर्वेदी की कविता '**पुष्प की अभिलाषा**' सुनायी-समझायी, उसके अतिरिक्त उसे तितली/भंवरे के अधिकार से भी जोड़ा और यह भी कहा कि तुम बच्चे भी अपना कोई विचार इसमें जोड़ सकते हो।

और अंत में सबसे खास बातें :

- 'मैंने कहा है', इसलिए मत मानना, खुद सोचना और सही लगने पर ही करना।
- गलतियाँ मैं भी करता हूँ इसलिए भेड़ बनकर मत चलना और मेरी गलती पर तुम मुझे भी टोक सकते हो।
- Idea आता है, प्रयोग करते हैं। कई बार असफल होते हैं लेकिन कोशिश करना नहीं छोड़ना है। सोचो स्कूल की बेहतरी के लिए हम क्या नयी बात कर सकते हैं?
- समस्या हमारी, समाधान भी....

(उद्धोधक : प्रशान्त अग्रवाल, प्राथमिक विद्यालय डहिया, बरेली, उ.प्र.)

(छोटा लेकिन महत्वपूर्ण दृश्य)

एक बड़ा विद्यार्थी दो छोटे विद्यार्थियों को शिक्षक के पास लाकर कहता है,
"सर जी, ये अब आये हैं।"

वे दोनों विद्यार्थी लगभग सवा घंटा देर से आये थे।

कारण पूछने पर बच्चों ने कहा, "सर जी, पयाल ढो रहे थे।"

शिक्षक उन दोनों को शेष कक्षा के सामने ले जाते हैं और उन दोनों की 'हरकत'
से कक्षा को अवगत कराते हैं, लेकिन सकारात्मक अंदाज़ में, यह कहते हुए,

"बहुत खुशी की बात है कि ये देर होने के बावजूद विद्यालय आये,

डांट-फटकार की संभावना के बावजूद आये,

पता है क्यों,

क्योंकि इन्होंने बीते हुए सवा घंटे नहीं, बचे हुए पौने पाँच घंटों के महत्व को
समझा।

घर की ज़रूरत और पढ़ाई दोनों को साधा।

.....शाबाश..... तालियाँ.....

(दोनों बच्चों का उत्साह तो बढ़ा ही, शेष विद्यार्थियों को भी प्रेरणा और
मार्गदर्शन मिला, ऐसी परिस्थितियों को साधने का।)

(प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, प्रा.वि. डहिया, बरेली)

बड़ी कक्षा के बच्चों से एक प्रेरक संवाद

शिक्षक : बच्चों, आप लोग बच्चे ही हो या बड़े हो गये?

बच्चे (उत्साह से) : बड़े हो गये।

शिक्षक : बड़े होने पर ताकत बढ़ गयी या कम हुई?

बच्चे : बढ़ गयी।

शिक्षक : ज्यादा ताकत मिलने पर जिम्मेदारी घटती है या बढ़ती है?

बच्चे : बढ़ती है।

शिक्षक : तो प्यारे बच्चों, अब तुम्हारी जिम्मेदारी भी बढ़ गयी है।

1. तुम पर छोटे बच्चों का ध्यान रखने की जिम्मेदारी आ गयी है।
2. अब तुम्हें कुछ भी ऐसा नहीं करना है जिसे देखकर छोटे बच्चे गलत बात सीखें।
3. ज्यादा जिम्मेदारी मतलब, अब तुम्हें अपनी भलाई खुद भी सोचना है। इतनी समझदारी से काम करो कि हमें तुम्हें टोकने की ज़रूरत ही न पड़े।
4. जिम्मेदारी बढ़ गयी मतलब, अब तुम्हें समय बेकार में नहीं गँवाओगे।
5. ताकत बढ़ी, जिम्मेदारी बढ़ी का मतलब, अब तुम डिब्बा नहीं, इंजन हो गये। अब तुम्हें धक्का नहीं मारना, तुम खुद चलोगे और अन्य बच्चों को भी सही दिशा में खींचोगे।
- 6.....

अब बताओ :

1. ताकतवर हो या कमज़ोर हो?

बच्चे : ताकतवर

2. इंजन हो या डिब्बा?

बच्चे : इंजन

3. धक्का मारना पड़ेगा या खुद चलोगे?

बच्चे : खुद चलेंगे।

4. कहना पड़ेगा या खुद पढ़ोगे?

बच्चे : खुद पढ़ेंगे।

5. केवल खुद चलोगे या औरों को भी खींच लोगे?

बच्चे : औरों को भी खींचेंगे?

6. केवल बोलोगे या करोगे?

बच्चे : करेंगे।

7. पक्का?

बच्चे : पक्का।

8. बिलकुल पक्का?

बच्चे : बिलकुल पक्का।

(नारा गूंजा)

काम करेंगे पूरा पक्का

नहीं रहेगा कोई कच्चा

कसम हमें ईमान से

जुट जायें जी-जान से

(संवादकार शिक्षक : प्रशान्त अग्रवाल, प्राथमिक विद्यालय डहिया, बरेली, उत्तर प्रदेश)

• बच्चों के समक्ष एक प्रेरक उद्बोधन •

चार तरह के ऐसे बल हैं, जिनको पाने की तुम्हें कोशिश करनी है :

1. शरीर का बल
2. बुद्धि का बल
3. मन का बल
4. दिल का बल

1. शरीर का बल आयेगा सही खान-पान से, योग और कसरत से, सफाई आदि की आदतों से।

हालांकि यह बल भी दो तरह का होता है, पहला मसल पॉवर यानी पटकने की ताकत, जैसे पहलवान में और दूसरा stamina यानी देर तक खड़े रहने या दूर तक चल पाने की ताकत, जैसे गाँधीजी में।...

2. बुद्धि का बल आयेगा पढ़ाई से, चिंतन से। “जितना गहरा होगा ध्यान, उतना स्थिर होगा ज्ञान”।

अब यह ज्ञान-बुद्धि का बल भी दो तरह का होता है, एक वह ज्ञान जो बाहर से अंदर जाता है, जैसे किताब से, शिक्षक से, और दूसरा वह ज्ञान जो अपने अंदर से पैदा होता है, सुने हुए/पढ़े हुए पर चिंतन-मनन करने से। (इस सन्दर्भ में वह दृष्टान्त भी दिया जिसमें एक छात्र सचिन ने कहानी, पुस्तक, शिक्षक की सोच से भी आगे जाकर 'सूरज और हवा' वाली कहानी को नयी दृष्टि से सोचने पर बाध्य कर दिया था कि यदि शर्त कोट पहनाने की लगती तो कौन जीतता!)

3. तीसरा है मन का बल, यानी हिम्मत-हौसला। यह आता है हिम्मत बढ़ाने वाली, प्रेरणा देने वाली कहानियों की किताबें, वीडियो आदि को पढ़ने-सुनने-देखने से। (अनेक उदाहरण दिये गये)

4. चौथा बल सबसे खास है, जिसे मानना आसान है लेकिन समझकर महसूस करना थोड़ा मुश्किल है लेकिन जो समझ जायेगा, महसूस करने लगेगा, वह सबसे ताकतवर हो जायेगा और वह बल है हृदय का बल, हृदय में प्रार्थना के प्रति विश्वास का बल। जो चीजें दिखती नहीं हैं, उनमें सर्वाधिक बल होता है। जैसे पेड़ के मुकाबले हवा में बल अधिक है, भगवान/अल्लाह दिखते नहीं हैं लेकिन सबसे शक्तिशाली हैं। ऐसे ही प्रार्थना की शक्ति दिखती नहीं है लेकिन अगर तुम सच्चे दिल से, पूरे मन से प्रार्थना करोगे तो उसका असर होगा, ज़रूर होगा, सबसे ज़्यादा होगा।

और भी बहुत कुछ समझाया गया, जैसे,

* जितने बोओगे, उससे कुछ कम ही अंकुर फूटेंगे.. का concept

* मन और दिल का फर्क

*

यह सब संक्षेप में लिखने की कोशिश की गयी है लेकिन असलियत में उक्त बातों को बच्चों के समक्ष उनके स्तर के अनुरूप भाषा-शैली में, उनको भी बोलने का मौका देते हुए विस्तार से अनेकानेक उदाहरणों, कहानियों के माध्यम से समझाने का प्रयास किया गया।

....आशा है, थोड़े से खेतों में ही सही, थोड़े से बीज ही सही, जमेंगे, उगेंगे, फलेंगे....

एक विशेष बात : उनको समझाते-समझाते खुद में भी इन बातों का अहसास सुदृढ़ हो जाता है।

(संवादकार : प्रशान्त अग्रवाल, प्राथमिक विद्यालय डहिया, बरेली, उ.प्र.)

(सुझाव-पत्र)

अगर पढ़ाई में मन न लगता हो तो....

- ऐसे माहौल में रहें व पढ़ें जहाँ disturb करने वाली चीजें या लोग कम हों, जैसे सुबह का शान्त समय।
- पढ़ने वाले साथियों की संगत में रहें ताकि पढ़ाई के माहौल में मन लगे।
- पढ़ते समय प्रकाश-व्यवस्था सही हो; कुर्सी-मेज वाली व्यवस्था हो तो अच्छा है।
- पहले पूरा पाठ मोटा-मोटा समझ लें कि पढ़ना क्या है, तब हर point का गहराईपूर्वक अध्ययन करें।
- अल्प-अवधि के छोटे-छोटे लक्ष्य बनायें जिन्हें हासिल करने पर प्रेरणा मिले।
- पढ़ने संबंधी सारी सामग्री, जैसे पेन-पेपर-पुस्तक आदि, पहले से लेकर बैठें ताकि पढ़ने के दौरान बाधा न पहुँचे।
- अगर सहायक लगे, तो पढ़ाई के दौरान very soft music सुन सकते हैं।
- पढ़ने के दौरान छोटे-छोटे विश्राम भी लें, लगातार एक ही मुद्रा में देर तक न बैठें।
- महत्त्वपूर्ण वाक्यों, शब्दों को पेंसिल से underline करें; कॉपी में लिखें तो और भी अच्छा।
- बोल-बोलकर पढ़ने-लिखने का प्रयोग भी कर सकते हैं ताकि कान, जीभ आदि इन्द्रियाँ भी लगने से एकाग्रता बढ़े।
- समय-सारणी बनाकर पढ़ें।
- भोजन हल्का लें, पानी पर्याप्त पीयें, नींद पूरी व गहरी लें।
- मन अधिक भटकने पर खाली समय में तालाब आदि प्राकृतिक दृश्य देखने से एकाग्रता, शान्ति व ताज़गी प्राप्त होगी।
- जैसे खाली जहाज़ को स्थिर रखने हेतु उसमें कुछ वज़न रखा जाता है, वैसे ही दिमाग को खाली न रखकर अच्छे लोग/अच्छे विचार/पढ़ाई आदि में व्यस्त रखें।
- पढ़ाई न करने पर भविष्य में क्या खतरे हो सकते हैं, कभी-कभी इस पर भी विचार करें; तब पढ़ाई का महत्त्व पुनः महसूस होने से पढ़ने में मन लगेगा।
- अतिवादी बनकर मन को अधिक न दबायें; मनोरंजन, खेल, हल्की बातों को भी दिनचर्या में स्थान दें।
- दिन के अन्त में सोचें कि पढ़ाई के लिहाज से आपका दिन कैसा रहा और स्वयं को Good/Average/Poor जैसे remark लिखकर दें। इससे अगले दिन हेतु प्रेरणा व नियंत्रण रहेंगे।

नोट : उक्त उपायों में से एक या अनेक को अमल में लाने की कोशिश करें, निश्चित रूप से एकाग्रता में सुधार होगा। और हाँ, तत्काल परिणाम की आशा न रखें, बीज बोने के बाद धैर्य रखें, प्रयोग का फल समय आने पर अवश्य मिलेगा। (विचारक : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली, उ.प्र.)

Wilma की Willpower : एक प्रेरक मिसाल

विल्मा रुडोल्फ, एक लड़की जो 4 वर्ष की उम्र में पोलियो से विकलांग हो गयी, जिसके बारे में डॉक्टर्स ने कह दिया कि वो सामान्य रूप से कभी चल भी नहीं पायेगी, और वही लड़की ठान लेती है कि मैं दुनिया की सबसे तेज धाविका बनूँगी, (ठीक विपरीत ध्रुवीय स्वप्न)

उसकी माँ उसके 'लगभग असंभव' स्वप्न में पूरा विश्वास जताकर उसे निरंतर प्रेरित करती हैं।

9 वर्ष की उम्र में वो अपनी बैसाखियाँ हटा देती है, चलने में चोटिल होती है, दर्द सहती है।

लगभग डेढ़ वर्ष बाद वह बिना सहारे के चल पाती है। डॉक्टर भी हैरान रह जाते हैं।

13 वर्ष की उम्र में अपनी पहली दौड़ प्रतियोगिता में वह अंतिम स्थान पर आती है। किंतु निरंतर असफलताओं के बावजूद एक दिन वह उसमें प्रथम आती है।

फिर मिलते हैं कोच टेंपल जो उसके स्वप्न में भरोसा जताते हैं।

मात्र 16 वर्ष की उम्र में वो 1956 के मेलबोर्न ओलंपिक में कांस्य पदक जीतती है।

और 1960 के रोम ओलंपिक में अभूतपूर्व प्रदर्शन करते हुए 3 स्वर्ण पदक जीतकर दुनिया की सबसे तेज धाविका बन जाती है। अनेक रिकार्ड्स के साथ पूरी दुनिया में छा जाती है।

**स्वप्न हुआ साकार
दृढ़निश्चय ही सार**

यह कहानी बताती है कि प्रबल इच्छाशक्ति के सामने असंभव शब्द कितना तुच्छ है।

विल्मा ने एक बार कहा था, "जीतना निश्चित रूप से महान है, लेकिन यदि आप वास्तव में ज़िन्दगी में कुछ करने जा रहे हैं, तो उसका रहस्य है, 'हारने को सीखिए'। कोई भी हमेशा अपराजित नहीं होता। अगर आप एक मुँहतोड़ पराजय के बाद भी उठ सकते हैं और दुबारा जीतने की कोशिश करते हैं, तो आप एक दिन चैंपियन बनेंगे।"

(प्रस्तुतीकरण : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली)